पर्यावरण गीत

डॉ. कृपा शंकर शर्मा 'अचूक'

जल पर कुछ दोहे

जल से ही जीवन मिले, खिलें फूल-फल आदि।
पशु-पक्षी धरती सभी, पी कर हों आल्हादि।।1।।
पानी पीने के लिए, करें प्रयास हजार।
बिनु पानी सब सून है, मन से करो विचार।।2।।
पानी घटता जा रहा, अब देखो हर रोज।
जीवन जीने के लिए करो नीर की खोज।।3।।
दादा-दादी ने कहा, पानी अति अनमोल।
जल बर्बादी मत करो, कहें बजाकर ढोल।।4।।
देकर जाना जगत को, बचा हुआ जो नीर।
वही संत साधू वही, वरना वह बे-पीर।।5।।
कहते-कहते कह गए, गीता, वेद, पुराण।
जल जीवन नभ, थल सभी प्राणों का भी प्राण।।6।।
दान करो जल का करो, यह है दान महान।
प्यास बुझाए और की सत्य वही इंसान।।7।।
कुएं और तालाब भी, दिखते आज उदास।
एक बूंद जल भी नहीं, कैसे हुए विकास।।8।।
निर्मलता जल खो रहा, बढ़ा प्रदूषण खूब।
कह 'अचूक' कैसे जिए, इस धरती पर दूब।।9।।
जल ही सबके वास्ते, जीने का आधार।
सच 'अचूक' यह बात है, सूने सब त्यौहार।।10।।
नदी पुकार-पुकार कर, देती नव संदेश।
जल बरबादी मत करो, यह 'अचूक' आदेश।।11।।
जल कहता जल जायेगा, छोड़ न मेरा हाथ।
मुझसे ही जीवन मिला, सब हैं मेरे साथ।।12।।
मैं बादल बन बरसता, ले रिमझिम का रूप।
मोर पपीहा हों खुशी, कहते आप अनूप।।13।।
कल-कल की आवाज में, गाता पानी गीत।
हरियाली हँस कह उठी, आज मिला मन मीत।।14।।
देव तुल्य जल आप ही दो अचूक वरदान।
तुमसे जीवित जगत है, रखो सभी का ध्यान।।15।।
जंगल में मंगल करो, हरते कण-कण पीर।
भूला नहीं 'अचूक' है, जल तेरी तासीर।।16।।
जल पूजा पावन बड़ी सुरजन करें बखान।
नित 'अचूक' विनती करे, तुम प्राणों के प्राण।।17।।
जल से समरसता मिले, मिटता रक्त विकार।
जन जीवन निर्भय हुए, खुले प्रेम का द्वार।।18।।
लेना अब संकल्प तो, बूंद-बूंद जल जोड़।
सुन 'अचूक' मिल जायेंगे, तुमको लाख करोड़।।19।।
जल पी तन मन बल मिले, मूक होत वाचाल।
मान सरोवर में सदा, बसे 'अचूक' मराल।।20।।

पर्यावरण गीत

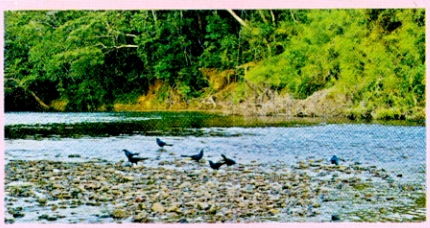

पर्यावरण बचाएं आओ, पर्यावरण बचाएं
हरी-भरी धरती अपनी हो, मिलके पेड़ लगाएं
पेड़ नया जीवन देते हैं
देख-देख मुस्काते
हितकारी भी संगी साथी
दूर न हमसे जाते
इनके साथ-साथ है रहना, इनको मीत बनाएं
हरी-भरी अपनी धरती हो, मिलके पेड़ लगाएं
देते हैं यह ठंडी छाया
तपन बुझाते तन की
मीठे-मीठे फल मिल जाते
बात कहें निज मन की
खुशहाली का बिगुल बजाते, मधु संगीत सुनाएं
हरी-भरी अपनी धरती हो, मिलके पेड़ लगाएं
वायु प्रदूषण दूर भागे तो
पर्यावरण बचेगा
मिले शुद्ध वायु हम सबको
नव इतिहास रचेगा
घने पेड़ फिर नील गगन में, झूम-झूम मुस्काएं
हरी-भरी अपनी धरती हो, मिलके पेड़ लगाएं
औषधियां 'अचूक' नित देते
करें भलाई सबकी
अंग-अंग उपकारी इनका
बात बड़े अनुभव की
जीवन भर यह करें तपस्या, तपसी फिर कहलाएं
हरी-भरी अपनी धरती हो, मिलके पेड़ लगाएं

कुछ दोहे (पानी पर)

जग का पानी आसरा, दे नित प्यास बुझाय
कह 'अचूक' पानी बिना, वन उपवन मुरझाय
धूल-फूल सबको सदा करे नीर अति प्रेम
जो 'अचूक' मन से यहां, छोड़-छाड़ कर नेम
आदर और सम्मान का, नहीं रखे जल ध्यान
जब 'अचूक' मैं हारता, दीखे एक समान
सुख-दुख में जब एक हो, बहता जैसे नीर
फिर 'अचूक' चिंता नहीं, खुश नित रहे फकीर
भेद न छोटे बड़े का, जल करता सत्कार
प्यास 'अचूक' बुझा रहा, कोई नहीं विकार
धूप-छाँव के खेल में, हुई नीर की जीत
कर्म पुनीत 'अचूक' था करता सब सों प्रीत
जीवन जीने के लिए, बहुत जरूरी नीर
यह 'अचूक' सच जानिए, सब पीरों का पीर
चाहे राजा रंक हो, अथवा हो गुणवान
कह 'अचूक' सबके लिए, जल ही जीवन जान
मिली सफलता बस उसे, करता सत व्यवहार
जन जीवन जल के बिना, यह 'अचूक' बेकार
बाग बगीचों बीच में, मस्त रहें फल फूल
नदी, कूप, तालाब सब, रहें स-जल अनुकूल
मोती में पानी नहीं, कुछ 'अचूक' नहीं मोल
कल-कल की आवाज ले, पानी करत किलोल
धरती जब प्यासी रहे, मिले न मीठा नीर
फिर 'अचूक' जल बरसता, हरे धरा की पीर
पानी की तासीर ही, पानी की तकदीर
सुन 'अचूक' पानी मिले बदल जाय तस्वीर
आँखों में पानी नहीं मन में नहीं हुलास
वे आँखें किस काम की रहें 'अचूक' उदास
महक उड़ी उड़ती गयी, पानी कोसों दूर
तन 'अचूक' थक चूर है, दिखें सभी बे-नूर

संपर्क करें:
डॉ. कृपा शंकर शर्मा 'अचूक'
38-ए, विजय नगर, करतारपुरा, जयपुर-302 006
मो. 09983811506
ईमेलः sonuparthjoshi@gmail.com